Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 2 | November 2023 - April 2024 | pp. 29-32

सांख्य दर्शन का तात्विक विश्लेषण

स्वाति दुबे
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

शोध सारांश

हमारे देश को दर्शन का देश कहा जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। भारत में प्रचलित दर्शन वैदांत दर्शन,जैन दर्शन,बौद्ध दर्शन,चार्वाक दर्शन,सांख्य दर्शन आदि प्रमुख है। सांख्य दर्शन में 25 तत्व या सत्य सिद्धांतों का प्रतिपादन किया गया है। इस दर्शन का प्रवर्तक कपिल मुनि को माना जाता है। प्रकृति से लेकर स्थूल-भूत पर्यन्त सारे तत्वों की संख्या की गणना किये जाने से इसे सांख्य दर्शन कहा गया है। सांख्य, संख्या द्योतक है। इस शास्त्र का नाम सांख्य दर्शन इसलिए पड़ा कि इसमें 25 तत्व या सत्य-सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। सांख्य दर्शन की मान्यता है कि संसार की हर वास्तविक वस्तु का उद्गम पुरुष और प्रकृति से हुआ है। पुरुष में स्वयं आत्मा का भाव है जबकि प्रकृति पदार्थ और सृजनात्मक शक्ति की जननी है। प्रकृति मात्र तीन गुणों के समन्वय से बनी है। इस त्रिगुण सिद्धान्त के अनुसार सत्व, राजस्व तथा तमस की उत्पत्ति होती है। प्रकृति की अविकसित अवस्था में यह गुण निष्क्रिय होते है पर परमात्मा के तेज सृष्टि के उदय की प्रक्रिया प्रारम्भ होते ही प्रकृति के तीन गुणों के बीच का समेकित संतुलन टूट जाता है। प्रस्तुत अध्ययन आज वर्तमान में भारतीय दर्शन को उसके वास्तविक स्वरूप में जानने एवं उसके प्रसार की आवश्यकता है जिस कारण वास्तविक जीवन के उद्देश्य को समझा जा सके। इसी आशय से इस शोध पत्र पर कार्य करने का प्रयास किया है। इस शोध पत्र की शैली ऐतिहासिक अध्ययन पर आधारित है जिसमें विभिन्न लेखकों के शोध पत्रों और उनके द्वारा रचित ग्रन्थों, पुस्तकों को आधार मानकर सांख्य दर्शन का अध्ययन किया गया।

संकेताक्षर—*मनोवैज्ञानिक दर्शन, तत्वज्ञान, त्रिगुणात्मकता, पुरुष प्रकृति*

प्रस्तावना

सांख्य-दर्शन वास्तव में मनोवैज्ञानिक दर्शन है। इसके तत्व स्थूल नहीं हैं। वे हमारे बौद्धिक जगत के तत्व हैं। इस जगत में केवल सूक्ष्म तत्व ही है। उनके सम्बन्ध में विचार सूक्ष्म है। अतएव जिनमें जितनी बुद्धि होती है यह उतना ही सूक्ष्म विचार कर सकता है। इसलिए सांख्य के तत्वों के विचार में भेद होना असम्भव नहीं है। मूल विचार में कोई भेद नहीं है। एक समय था, जब सांख्य-दर्शन का अध्ययन बहुतायत रूप में होता था। यह खेद का विषय है कि आगे इसके रहस्य को विद्वान लोग भूल गये। प्राचीन परम्परा नष्ट हो गयी और विद्वानो ने सांख्य-भूमि को भी न्याय-वैशेषिक भूमि के समान ही स्थूल जगत के तत्वों का प्रतिपादन करने वाला शास्त्र मान लिया है। इसमें संदेह नहीं है कि बुद्ध के पश्चात भारतवर्ष में बहुत ऊँचे दर्जे के विद्वान हुए उन्होने दर्शन के ऊपर बहुत विचार किया। इनकी विद्वता पाण्डित्यपूर्ण थी, बहिर्मुखी थी। जहाँ तक दार्शनिक विचार बाह्य जगत से विशेष सम्बन्ध रखता है, वहाँ तक तो इनके पाण्डित्य ने दर्शन शास्त्र में चमत्कार कर दिखाया, किन्तु जहाँ से उस विचार का क्षेत्र एक प्रकार से अलौकिक जगत में प्रवेश करता है, वहाँ इनका पाण्डित्य बहुत सफल नहीं रहा। वहाँ तो ज्ञानियों की अर्न्तदृष्टि होने से ही सफलता मिलती है।"

सांख्य-दर्शन का भारतीय समाज पर इतना व्यापक प्रभाव हो चुका था कि महाभारत (श्रीमद्भगवद्गीता), विभिन्न पुराणों, उपनिषदों, चरक संहिता और मनु संहिता में सांख्य के विशिष्ट

उल्लेख मिलते हैं। इसके पारंपरिक जन्मदाता कपिल मुनि थे। सांख्य दर्शन में छह अध्याय और 541 सूत्र हैं। सांख्य-दर्शन भारतीय दर्शनों में सबसे प्राचीन माना जाता है। इसके रचयिता महर्षि कपिल कहे गये हैं। जो पुराणों के मतानुसार सतयुग के आरम्भ ही प्रकट हुए थे। कपिल मुनि को आदि विद्वान और परम ऋषि के नाम से भी उल्लेख किया गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी 'सिद्धानां कपिलो मुनि' कहकर, उनके महत्व को विशेष रूप से प्रदर्शित किया है। वास्तव सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सांख्य ने जो विवेचन किया है वह सब से अधिक आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से सत्य सिद्ध होता है। जहाँ वैशेषिक और न्याय ने नौ द्रव्यों (मूल तत्त्वों) से सृष्टि की रचना बतलाई है, वह कपिल ने सूक्ष्म दृष्टि से सृष्टि को केवल दो तत्व से दी निर्मित माना है, जो विज्ञान के नवीनतम सिद्धान्त से भी मिलता-जुलता है। सांख्य दर्शन कहता है कि प्रत्येक कार्य में उसका कारण विद्यमान रहता है जिस प्रकार एक सूक्ष्म बीज में बरगद का विशाल वृक्ष विद्यमान रहता है वैसे ही प्रत्येक कार्य में उसका कारण विद्यमान रहता है। उत्पत्ति और विनाश में न कोई भी वस्तु बनती है और न ही नष्ट होती है बल्कि केवल उसका अवस्था परिवर्तन होता है। प्राचीन काल से विद्वानों में यह कहावत प्रचलित है "किन सांख्य समं ज्ञानं न हि योगसमं बलं।" वास्तव में सृष्टि के निर्माण में प्रकृति का विकास जिस प्रकार हुआ और उसमें आत्मा का नया स्थान है, इसका विवेचन कपिल मुनि ने जिस सूक्ष्म दृष्टि से किया है वह सराहनीय है। सांख्य दर्शन में पुरुष तथा प्रकृति के द्वैत सिद्धान्त को माना है। प्रकृति के दो रूप है—

1. अव्यक्त जो अनुमान से जाना जा सकता है।
2. व्यक्त जिसे हम प्रत्यक्ष और अनुभव से जान सकते हैं।

इस प्रकार व्यवहार में यह सिद्धान्त "त्रैत तीन मुख पदार्थों को मानने वाला हो जाता है। इन तीनों को सांख्य कारिका के लेखक ने इस वाक्य में प्रकट किया है। "व्यक्ताव्यक्त ज्ञ विज्ञानात्:" अर्थात "तीन पदार्थ ही मुख्य है व्यक्त अर्थात दिखाई पड़ने वाला जगत अव्यक्त अर्थात मूल प्रकृति, "ज्ञ" अर्थात ज्ञाता रूप।" उनमें से मूल पुरुष का क्या स्वरूप है, उसकी विवेचन करते हुए एक स्थान पर कहा है—ज्ञ अथवा पुरुष एक परोक्ष विषय है। यह त्रिगुणातीत निर्लिप्त है। इसलिए इसका अस्तित्व किसी प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता और न इसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का अनुमान किया जा सकता है। इसको जानने का एकमात्र साधन शब्द प्रमाण या आगम है। इस "ज्ञ" का कोई हेतु कारण नहीं है।"

सांख्य शास्त्र ने जीवात्मा-पुरुष को अनेक और ज्ञाता-पुरुष को एक बतलाया है। यह ज्ञाता पुरुष शुद्ध ज्ञान स्वरूप है। तीनों गुणों से सृष्टि की उत्पत्ति-सांख्य के अनुसार सत्व-रज-तम मूल प्रकृति के तीन गुण है जो किसी समय साम्यावस्था में रहते हैं और कभी विषम अवस्था में। जब ये गुण साम्यावस्था में होते हैं, उस समय को प्रलय कहा जाता है। मूल प्रकृति और पुरुष के अतिरिक्त और कोई नहीं होता फिर जब प्रकृति में संक्षोभ होता है तो तीनों गुणों में न्यूनाधिकता होने लगती है और सर्वप्रथम सत्वगुण की प्रधानता से महत्व अथवा बुद्धि-तत्व की उत्पत्ति होती है। जब बुद्धि तत्व में रजो गुणों की प्रबलता होती है तो अहंकार की उत्पत्ति होती है। अहंकार में जब तम गुण की प्रबलता होने लगती है तो शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध—इन पाँच सूक्ष्म तन्मात्राओं की उत्पत्ति होती है। जब तम की अधिकता बढ़ती है तब इन सूक्ष्म तन्मात्राओं से पाँच स्थूल भूतों अर्थात आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी की उत्पत्ति होती है। इन्हीं पाँच महाभूतों के मिलने और तीनों गुणों की न्यूनाधिकता के फलस्वरूप बाद में भांति-भांति की स्थवर-जंगम सृष्टि प्रकट होती है। गुणों का सम्बन्ध-प्रकृति के तीनों गुण यद्यपि एक-दूसरे के विरुद्ध स्वभाव वाले हैं, पर वे सदैव एक साथ रहते हैं और उनके मिलने से ही सृष्टि की उत्पत्ति और विकास सम्भव होता है। इन गुणों के सम्बन्ध और प्रभाव को समझने के लिए सांख्य सिद्धांत वाले दीपक का उदाहरण देते हैं कि जिस प्रकार तेल बत्ती और अग्नि पृथक-पृथक पदार्थ हैं जो एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न पड़ते हैं और एक-दूसरे के विरोधी हैं, पर इन तीनों के संयोग से प्रकाश की उत्पत्ति होती है। यदि इन तीनों में से एक भी न हो तो प्रकाश कदापि नहीं हो सकता। इसी प्रकार सत्व, रज, तम भी विरोधी होते हुए सृष्टि निर्माण के कार्य को सिद्ध करते रहते हैं। ये तीन गुण साथ रहते हुए भी एक-दूसरे को दबाने की चेष्टा करते रहते हैं जिसे सांख्य की परिभाषा में—अभिभववृत्ति कहते हैं। जिस समय रजो गुण और तमो गुण को दबा कर सत्व गुण की वृद्धि होती है तो प्रकृति और प्रकाश रूप धर्मों की अभिव्यक्ति होती है। जब सत और तम को अभिभूत करके रजो गुण प्रबल हो जाता है तो अप्रीति और प्रवृत्ति रूप धर्मों की प्रधान रूप से अभिव्यक्ति होती है। जब तमो गुण शेष दोनों गुणों को अभिभूत

कर देता है तो विषाद और स्थिति रूप धर्मों की अभिव्यक्ति होती है। पर इनमें कोई भी गुण अकेला तब तक किसी भी धर्म या कर्म की अभिव्यक्ति नहीं कर सकता जब तक उसे शेष दोनों गुणों की सहायता प्राप्त न हो। सांख्य में इसे आश्रय वृत्ति कहते हैं। इसका आशय यही है कि जब तक जगत की स्थिति है उसके प्रत्येक पदार्थ, प्रत्येक वाणी, प्रत्येक जीवात्मा में तीन गुणों का अस्तित्व अवश्य पाया जाएगा। यह जीवात्मा ज्ञान द्वारा गुणों के रूप को समझ कर योग द्वारा प्रयत्न करके तीनों गुणों से छुटकारा पा लेता है तव वह मुक्त पुरुष हो जाता है।

प्रकृति मूल रूप में सत्व, रज, तमस की साम्यावस्था को कहते हैं। तीनों आवेश परस्पर एक-दूसरे को निःशेष (दमनजतंसप्रम) कर रहे होते हैं। जैसे त्रिकंटी की तीन टांगे एक-दूसरे को निःशेष कर रही होती है। परमात्मा का तेज परमाणु (त्रित) की साम्यावस्था को भंग करता है और असाम्यावस्था आरंभ होती है। रचना-कार्य में यह प्रथम परिवर्तन है। इस अवस्था को महत् कहते हैं। यह प्रकृति का प्रथम परिणाम है। मन और बुद्धि इसी महत् से बनते हैं। इसमें परमाणु की तीन शक्तियाँ बहिर्मुख होने से आस-पास के परमाणुओं को आकर्षित करने लगती है। अब परमाणु के समूह बनने लगते हैं। तीन प्रकार के समूह देखे जाते हैं—

पहला परमाणु—समूह वह है जिनसे रजस गुण शेष रह जाता है। यह तेजस अहंकार कहलाता है। इसे वर्तमान वैज्ञानिक भाषा में इलेक्ट्रॉन कहते है।

दूसरा परमाणु—समूह वह है जिसमें सत्व गुण प्रधान होता है वह वैकारिक अहंकार कहलाता है। इसे वर्तमान वैज्ञानिक प्रोटोन कहते हैं।

तीसरा परमाणु—समूह वह है जिसमें तमस गुण प्रधान होता है इसे वर्तमान विज्ञान की भाषा में न्यूट्रॉन कहते हैं। यह भूतादि अहंकार है।

इन अहंकारों को वैदिक भाषा में आप कहा जाता है। ये (अहंकार) प्रकृति का दूसरा परिणाम है। तदनन्तर इन अहंकारों से पाँच तन्मात्राएँ (रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द) पाँच महाभूत बनते हैं अर्थात् तीनों अहंकार जब एक समूह में आते हैं तो उसे परिमण्डल कहते हैं। भूतादि अहंकार एक स्थान पर (न्यूयादि संख्या में) एकत्रित हो जाते हैं तो भारी परमाणु-समूह बीच में हो जाते हैं और हल्के उनके चारों और घूमने लगते हैं। इसे वर्तमान विज्ञान एटम कहते है। दार्शनिक भाषा में इन्हें परिमण्डल कहते हैं। परिमण्डलों के समूह पाँच प्रकार के हैं। इनको महाभूत कहते हैं—पार्थिव, जलीय, वायवीय, आग्नेय और आकाशीय।

सांख्य का प्रथम सूत्र है—

अथ त्रिविधदुख खात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थ।।

अर्थात् अब हम तीनों प्रकार के दुखों-आधिभौतिक (शारीरिक), आधिदैविक एवं आध्यात्मिक से स्थायी एवं निर्मूल रूप से छुटकारा पाने के लिए सर्वोत्कृष्ट प्रयत्न का इस ग्रन्थ में वर्णन कर रहे हैं। सांख्य का उद्देश्य तीनों प्रकार के दुःखों की निवृत्ति करना है। तीन दुःख है—आधिभैतिक—यह मनुष्य को होने वाली शारीरिक दुःख है जैसे बीमारी, अपाहिज होना इत्यादि, आधिदैविक—यह देवी प्रकोपों द्वारा होने वाले दुःख है जैसे बाढ़, आंधी, तूफान, भूकंप इत्यादि के प्रकोप और आध्यात्मिक—यह दुःख सीधे मनुष्य की आत्मा को होते हैं जैसे कि कोई मनुष्य शारीरिक व दैविक दुखों के होने पर भी दुखी होता है। उदाहरणार्थ—कोई अपनी संतान अपना माता-पिता के बिछुड़ने पर दुःखी होता है अथवा कोई अपने समाज की अवस्था को देखकर दुःखी होता है।

सांख्य का एक अन्य सूत्र है—

सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिरू प्रकृतेर्महान,
महतौहंकारौहंकारात् पंचतन्मात्राण्युभयमिनिन्द्रियं
तन्मात्रेभ्य स्थूल भूतानि पुरुष इति पंचविंशतिर्गण।।

अर्थात् सत्व, रजस और तमस की साम्यावस्था को प्रकृति कहते हैं। साम्यावस्था भंग होने पर बनते हैं महत् तीन अहंकार, पाँच तन्मात्राएँ, 10 इन्द्रियाँ और पाँच महाभूत। पच्चीसवां गण है पुरुष।

बन्धन मोक्ष—इस प्रकार सांख्य-शास्त्र ने अध्यात्म-मार्ग में प्रगति करने के जो साधन बतलाये हैं, उनका लक्ष्य उन बन्धनों से छुटकारा पाना ही है, जो प्रकृति के साहचर्य से उसे प्राप्त हो जाते,या जिनमें अपने को बंधा हुआ अनुभव करने लगता है। इसका मुख्य उपाय तो ज्ञान ही है जैसा सांख्य दर्शन के 3-23 सूत्र में कहा गया है—

"ज्ञाना-मुक्तिः"

ज्ञान का अर्थ है चेतन-अचेतन या पुरुष और प्रकृति के भेद को स्पष्ट रूप से समझकर उसे हृदयङ्गम कर लेना। क्योंकि यही मुक्ति का एकमात्र साधन है। जीव जितना ही अपने को

भौतिक प्रकृति का संसार का एक अंग समझता जायेगा, उतना ही वह बन्धनों में फंसता चला जायेगा और जितना वह चेतन-अचेतन के भेद को समझ कर अपने चेतन रूप का अनुभव करने लगेगा उतना ही मुक्ति के समीप पहुँच जायेगा।

इसी को स्पष्ट करने के लिए अगले सूत्र (3-24) में कह दिया है—

"बन्धो विपर्ययात"

अर्थात—"ज्ञान से विपरीत जो अज्ञान या अविवेक है उसके होने से बचना होता है" जब तक मनुष्य को आत्मा ज्ञान नहीं होता तब तक वह सांसारिक सुख और सम्पदाओं को जीवन का सार समझकर उनमें लिप्त रहता है और मनुष्य जन्म के सर्वोच्च ध्येय मुक्ति या अपवर्ग की तरफ से उदासीन रहता है। इस अवस्था का वर्णन करते हुए एक व्याख्याकार ने लिखा है—"जैसा हम देख चुके है, प्रकृति का विकास पुरुष की दृष्टि में होता है इस संयोग का असर पुरुष पर भी पड़ता है, वह भ्रम में समझने लगता है कि जो कुछ हो रहा है, वह बाहर नहीं उसके अन्दर हो रहा है। वह प्रकृति कृति में इतना विलीन हो जाता है कि अपने आपको उससे अलग देख नहीं सकता। यह अविवेक ही उसका बन्धन है और इससे टूटना ही मोक्ष है। प्रकृति की क्रिया पुरुष को बन्धन से मुक्त करने के लिए है।" कारिका में इस क्रिया को नाटक की अभिनेत्री के अभिनय से उपमा दी गई है। जो लोग नाटक देखने जाते है वे कुछ समय के लिए अपने आपको भूल ही जाते है और नाट्य कलाकारों के अभिनय के साथ वे अपने को संयुक्त कर लेते है और उसके साथ हँसते और रोते हैं। पीछे जब अनुभव करते है कि नाट्य कलाकार तो निर्वाह के लिए अभिनय करते थे और उनका हर्ष-शोक केवल दिखावा था, तो उन्हें अपना हर्ष-शोक भी निरर्थक दिखने लगता है। इस परिवर्तन का कारण यह होता है कि दर्शक नाट्य कलाकारों को उनके वास्तविक रूप में देखने लगता है। जगत के सम्बन्ध में ऐसा ही ज्ञान हो जाना विवेक कहलाता है।" सांख्य सूत्र में बतलाया गया है कि मोक्ष का एक मात्र साधन ज्ञान है।

निष्कर्ष

सांख्य के अनुसार 24 मूल तत्व होते हैं जिसमें प्रकृति और पुरुष पच्चीसवां है। प्रकृति का स्वभाव अन्तर्वर्ती और पुरुष का अर्थ व्यक्ति-आत्मा है। विश्व की आत्माएं संख्यातीत हैं। ये सभी आत्माएँ समान हैं और विकास की तटस्थ दर्शिकाएँ हैं। आत्माएँ किसी न किसी रूप में प्रकृति से संबंधित हो जाती है और उनकी मुक्ति इसी में होती है कि प्रकृति से अपने विभेद का अनुभव करे। जब आत्माओं और गुणों के बीच की भिन्नता का गहरा ज्ञान हो जाये तो इनसे मुक्ति मिलती है और मोक्ष संभव होता है। सांख्य सृष्टि रचना की व्याख्या एवं प्रकृति और पुरुष की पृथक-पृथक व्याख्या करता है। सांख्य सर्वाधिक पौराणिक दर्शन माना जाता है। सांख्य-सिद्धान्त का दर्जा तत्वज्ञान की दृष्टि से बहुत ऊँचा है।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता, सुरेन्द्रनाथ दास, हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन फिलोसोफी, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन प्रा. लि., 1975
2. शर्मा, अरविंद, पुरुषार्थ : हिंदू सिद्धांत में एक अध्ययन, एशियाई अध्ययन केंद्र, मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, 1982
3. सिन्हा, जदुनाथ, भारतीय दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन प्रा. लि., 2014
4. मिश्रा, बंशीधर, सांख्यतत्व कौमुदी, 1921
5. सरस्वती, स्वामी दयानंद, सांख्य दर्शन महर्षि कपिल प्रणीतम, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, 2018
6. कुमार, डॉ. रोहित, भारतीय शिक्षा और दर्शन (स.), एच.एस. आर.ए. पब्लिकेशन, बंगलौर, 2023
7. सरस्वती, स्वामी निरंजननंद सांख्य दर्शन : यौगिक पर्सपेक्टिव थियरीज ऑफ़ रियलिज्म, योग प्रकाशन ट्रस्ट, मुंगेर, 2008
8. शास्त्री, आचार्य उदयवीर, सांख्यदर्शनम् विद्योदय भाष्यम, विजयकुमार गोविंदराम हसांनद प्रकाशक, 2017